स्वतंत्रता संग्राम के महानायक

लाला शंकरलाल सांघी

गोपाल शरण गर्ग

स्वतंत्रता संग्राम के महानायक

लाला शंकरलाल सांघी

गोपाल शरण गर्ग

(राष्ट्रीय महामंत्री)

श्री अग्रसेन फाउंडेशन

प्रकाशक :
श्री अग्रसेन फाउंडेशन
83, मॉडल बस्ती, करोल बाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 011-23633333, 23510630
E-mail : agroha@gmail.com
Website : www.allagrawal.org

स्वतंत्रता संग्राम के महानायक

लाला शंकरलाल सांघी

ISBN : 978-81-929878-5-9

मूल्य : ₹ 40/-
© : प्रकाशक
प्रथम संस्करण : 2015
शब्द-संयोजन
एवं आवरण : आधुनिक जनसंचार प्रा.लि. / 97180 67709
मुद्रक : आधुनिक जनसंचार प्रा.लि. / 011-27103051

Swatantrata Sangram Ke Mahanayak
Lala Shankarlal Sanghi *by* Gopal Saran Garg

जिन्दगी बचाने की प्रार्थना की। महाराजा ने कहा कि अगर वह माफी मांग ले तो उसे छोड़ देंगे, लेकिन लाला शंकरलाल ने माफी मांगने से इनकार कर दिया। सन् 1908 से 1913 तक वे पटियाला जेल में रहे और महाराजा पटियाला ने उन्हें राज्य छोड़ने का आदेश दिया। वे पटियाला छोड़कर दिल्ली आ गए।

लालाजी की पत्नी श्रीमती मिसरी देवी अपने पीहर नारनौल में थी, लालाजी ने अपनी पत्नी को दिल्ली बुला लिया। पत्नी के जेवर बेचकर उन्होंने लिखने वाली स्याही का काम शुरू कर दिया। तीन रुपये महीना किराए पर घर लेकर रहने लगे। स्याही की बोतलें बनाकर वे सदर बाजार ले जाकर बेचने लगे। बाद में उन्होंने 'कांग्रेस' अखबार निकाला, जो उर्दू में 1930 तक प्रकाशित हुआ। सन् 1919 में दिल्ली स्वदेशी को-ऑपरेटिव स्टोर की चांदनी चौक में स्थापना की, जिसका उद्घाटन महात्मा गांधी ने किया। स्टोर के निदेशकों में हकीम अजमल खां, एम.ए. अंसारी, आसफ अली तथा कई नेता थे।

1919 से पहले लालाजी होमरूल लीग में काम करते थे। महात्मा गांधी 1919 में दिल्ली आए तो हकीम अजमल खां के निवास पर ठहरे। गांधी जी ने दिल्ली कांग्रेस की गतिविधियों को चलाने के बारे में विचार-विमर्श किया तो हकीम जी ने लालाजी का नाम लिया। तब गांधीजी ने लालाजी से कांग्रेस

में शामिल होने का अनुरोध किया। हैदरकुली के सामने दिल्ली में कांग्रेस का दफ्तर खोला गया। लालाजी ने असहयोग आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। 1921 में उन्हें चार साल की सजा हुई।

लालाजी 1920-21 से 1939 तक पहले दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मंत्री और फिर अध्यक्ष रहे। सन् 1932 में कांग्रेस अधिवेशन के वे स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। लालाजी कांग्रेस में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के करीबियों में से थे और उन पर उनका बहुत विश्वास था। वे जापान गए और वहां से लौटकर नेताजी से मिले तथा जर्मनी जाने की सारी योजना बतायी। नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारत से गायब हो गए। उनके सभी साथी गिरफ्तार कर लिए गए, जिनमें लाला शंकरलाल भी थे। उन्हें भयंकर यातनाएं दी गईं, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं बताया कि नेताजी कैसे भारत से बाहर गए। लालाजी को लालकिले में बंद कर दिया गया। गांधीजी ने भी उनकी कोई मदद नहीं की, लेकिन बाद में 'हरिजन' में लालाजी के साथ जेल में हो रहे जुल्मों के बारे में 19 अप्रैल, 1942 को लिखा। इससे ब्रिटिश सरकार चौकन्नी हो गई। उन्हें पहले क्वालालम्पुर जेल भेजा और फिर कुर्ग (बंगलौर) भेजा। बाद में सुभाष चंद्र बोस के बड़े भाई शरत चंद्र बोस के साथ ऊटी में एक बंगले में नजरबंद कर दिया, जहां से वे 1945 में रिहा होकर घर लौटे।

आईएनए केस में लालाजी ने सक्रिय हिस्सा लिया। सन् 1947 में उन्होंने दो बीमा कम्पनियां खरीदी, जिनके वे प्रबंध निदेशक बने। उन्होंने कांग्रेस से अपना नाता तोड़ लिया। पंडित नेहरू ने उन पर कांग्रेस में शामिल होने और अपने मंत्रिमंडल में मनचाहा विभाग देने के लिए बुलाया, लेकिन उन्होंने साफ इनकार कर दिया।

बम्बई के तत्कालीन मुख्यमंत्री की शिकायत पर लाला शंकरलाल की तीनों बीमा कम्पनियों पर 15 जुलाई, 1951 को ताला लगाने तथा उनकी गिरफ्तारी का आदेश दिया गया। वे गिरफ्तार हुए तथा बाद में जमानत पर छूट गये। अपने साथियों को भी उन्होंने जमानत पर छुड़ा लिया। उनके पास सम्पति के नाम पर केवल 16, बाराखम्बा रोड की कोठी बची, जो उनकी पत्नी के नाम थी। शादीराम से इस कोठी पर कर्ज लेकर लालाजी ने अपना

काम चलाया। एक साल बाद उनकी पत्नी श्रीमती मिसरी देवी का निधन हो गया। लालाजी भी बीमार हो गये। उनकी हालत खराब हो गयी। रफी अहमद किदवई उनसे मिलने आते थे। रफी साहब ने उनसे कहा कि वे कांग्रेस में शामिल हो जाएं तो तीनों बीमा कम्पनियां लौटा देंगे, लेकिन लालाजी नहीं माने। बाद में नेहरूजी भी स्वयं मिलने आए।

जुलाई, 1953 में उनका निधन हो गया। जिस प्रकार नेताजी जी का गायब होना एक रहस्यमयी घटना है उसी प्रकार श्री शंकरलाल जी की मृत्यु भी एक रहस्यमयी घटना है। निधन से पूर्व वे वसीयत कर गये कि उनकी कोठी (16, बाराखम्बा रोड) को बेचकर बीमा कम्पनी से जुड़े मुकदमों में शामिल सभी कर्मचारियों की मदद की जाए तथा हर एक को दो से लेकर पांच हजार रुपये दे दिए जाएं। कोठी दो लाख दस हजार रुपये में बिकी, जिसमें से एक लाख रुपये कोठी को रेहन रखकर पहले ही कर्ज लिया गया था।

सुभाष चंद्र बोस के पलायन में सहयोग

लाला शंकरलाल (बंसल) को पुलिस ने केन्द्रीय सरकार के आदेश पर सुभाष चंद्र बोस के भारत पलायन में सहयोग देने के आरोप में गिरफ्तार कर शाहीनजरबंद कर दिया गया।

लाला शंकरलाल की 1918 से 1930 तक की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए अधिकारियों ने लिखा है कि शंकरलाल का जन्म 1885 में अम्बाला में हुआ था। बचपन में लाला शंकरलाल, लाला लाजपतराय, अजीत सिंह भाई ब्रह्मानंद के भाषणों से बहुत प्रभावित होते थे और अवसर मिलने पर उनकी मीटिंगों में भाषण सुनने जाया करते थे।

1908 में बी.ए. की परीक्षा में पास होने के बाद कॉलेज की पढ़ाई छोड़ दी और आर्य समाज के सदस्य बन गए। लाला शंकरलाल के पिताजी भी पटियाला रियासत में इन गतिविधियों में भाग लेते थे और इन गतिविधियों के कारण रियासत पटियाला से इन्हें निष्कासित किया गया था।

1913 में स्वदेशी स्टोर के नाम से चांदनी चौक में स्वदेशी माल की एक दुकान खोली और उस समय से दिल्ली में रहने लगे। अपनी स्वयं की

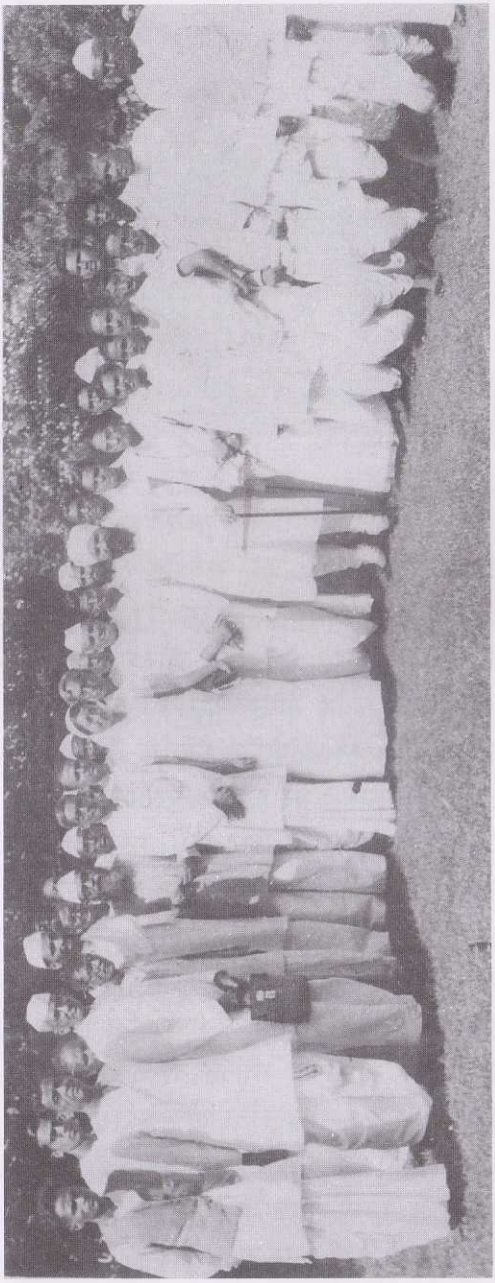

मेहनत से जीवन में तरक्की करने लगे। उनकी राजनैतिक गतिविधियां व व्यापार एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए थे। 1914 में कांग्रेस महासभा लखनऊ अधिवेशन में सम्मिलित हुए और 1917 में होमरूल लीग की एक शाखा दिल्ली में खोली। कलकत्ता में भी 1917 में ऑल इंडिया अधिवेशन की कमेटी में दिल्ली के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए। बाद में 1918 में कांग्रेस महासभा के स्पेशल अधिवेशन का प्रबंध किया और कांग्रेसी होने के नाते पूरी योग्यता से उसे सफल बनाया। इस अवसर पर लाला शंकरलाल ने दिल्ली कांग्रेस के नाम से एक दैनिक पत्र उर्दू भाषा में प्रकाशित करना शुरू

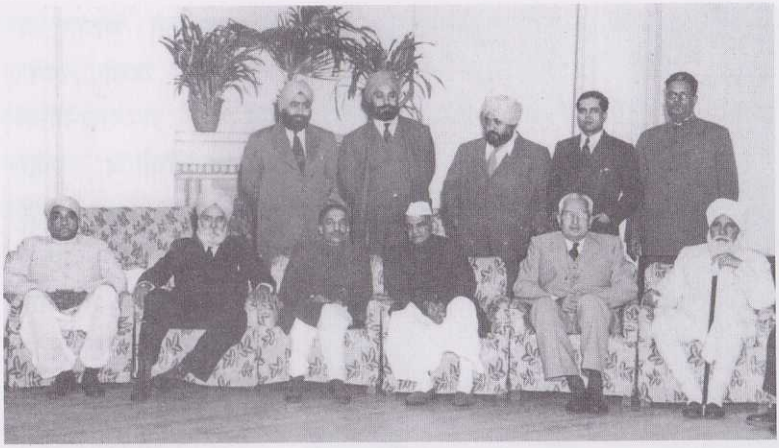

कर दिया।

शंकरलाल की जीवन की घटनाओं के संदर्भ में कुछ तथ्य इस प्रकार हैं। 1909 में उनके विरुद्ध पटियाला रियासत में एक राजद्रोह (सैडीशन) मुकदमा बना था। 1917 में वे होमरूल लीग के सेक्रेटरी थे। 1917 की कांग्रेस सभाओं में भाषण देते थे। 1917-18 में दिल्ली प्रोंविशल कांग्रेस कमेटी के ज्वाइंट सेक्रेटरी थे। 1919 में कांग्रेस शीर्षक नाम से एक अखबार का सम्पादन किया और 1919 में स्वदेशी को-ऑपरेटिव स्टोर के मैनेजर बन गए। स्वदेशी स्टोर को शंकरलाल के परामर्श पर कांग्रेस नेताओं ने प्रारम्भ किया था और ये स्वदेशी स्टोर 1927 में बंद कर दिया गया। मार्च-अप्रैल, 1919 में रौलेट एक्ट के अंतर्गत उपद्रवों में मुकदमा चला परंतु बरी हो गए। नागपुर के 1920 के कांग्रेस अधिवेशन में खिलाफत आंदोलन की पैरवी करने के लिए दिल्ली के प्रतिनिधि होकर नागपुर अधिवेशन में गए।

1921 में दिल्ली में असहयोग आंदोलन में मीटिंगों में भाषण दिए। 1921 में जब प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आए तो उनके स्वागत के बहिष्कार के आंदोलन में जोर-शोर से भाग लिया। 1921 में दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी रहे। सितम्बर, 1921 धारा 144 के अंतर्गत सरकार ने उन्हें नोटिस दिया कि वे पब्लिक मीटिंगों में भाषण न करें। दिसम्बर, 1921 में धारा 17-1 क्रिमिनल लॉ अमेंडमेंट एक्ट के अंतर्गत तीन वर्ष सख्त कैद की सजा हुई

और सजा काटने के बाद जेल से रिहा होकर वापस दिल्ली आए।

1924 में दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी चुने गए और दिल्ली डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस कमेटी के वाइस प्रेसीडेंट चुने गए। दशहरा त्यौहार के अवसर पर जो सवारी निकलती थी, उनके रास्तों पर धारा 144 के अंतर्गत डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने आदेश दिया कि कोई भी व्यक्ति जुलूस में पड़ने वाले रास्तों पर मकानों की छतों पर किसी प्रकार ईंट, रोडा, पत्थर, गुलेल या लाठी एकत्रित न करे। लाला शंकरलाल ने उस आदेश को लेने से इनकार कर दिया। जिस पर एक वर्ष कैद व 500 रु. जुर्माना धारा 504/188 में 1926 में हुई। 1929 तक कांग्रेस व कांग्रेस सेवादल के लिए काम किया। 1930 में कांग्रेस सत्याग्रह आंदोलन के लिए और पूर्ण स्वतंत्रता के लिए भाषण दिए। प्रो. इन्द्र की पार्टी ने स्थानीय कांग्रेस पर कब्जा कर लिया और लाला शंकरलाल को पद से हटा दिया।

देशसेवक संघ की एक मीटिंग दिल्ली में हुई, जिसमें हिजली डिटेंशन कैम्प में नजरबंदों पर धुआंधार गोली चलाने के कारण असंतोष प्रकट किया गया। लाला शंकरलाल देशसेवक संघ के वाइस प्रेसीडेंट नियुक्त हुए।

1932 में दिल्ली ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी का अवैध घोषित अधिवेशन करने के लिए कार्यसमिति व स्वागत समिति बनाई गई। देश में और विशेषकर दिल्ली में शांति कायम रखने के लिए प्रमुख अधिकारियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया, जिनमें लाला शंकरलाल भी थे।

21 अप्रैल, 1932 से 20 जून, 1932 तक दो माह के लिए दिल्ली जेल में नजरबंद रखे गए व फिर लाला शंकरलाल ने कांग्रेस की गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया। 1935 में देश के बड़े-बड़े भागों का व्यापारिक सम्बन्ध बनाने के लिए दौरा किया और इस दौरे के समय प्रमुख सामाजिक नेताओं से सम्पर्क किया।

जून, 1934 में दिल्ली कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को उनके कोष संग्रह से 500 रु. दान दिए। 13.9.1934 से 01.10.1934 तक सोशलिस्ट पार्टी बनारस मीटिंग में वे सम्मिलित हुए। 6 से 8 अक्टूबर, 1934 तक जो सोशलिस्ट कांफ्रेंस

मुजफ्फरनगर में हुई, उसमें उन्होंने भाग लिया।

जनवरी, 1935 में दिल्ली कांग्रेस प्रचार समिति में दिल्ली में कार्य किया। दिल्ली के देहाती क्षेत्रों में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की ओर से प्रचार कार्य किया। इसका इन्हें डायरेक्टर भी नियुक्त किया गया। फरवरी, 1931 में कांग्रेस सोशलिस्ट पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड के डायरेक्टर नियुक्त हुए। देहात संघ की स्थापना की, जो वास्तव में अप्रैल, 1935 से कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी दिल्ली की ओर से कार्य कर रहा था। मई, 1935 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी दिल्ली के सभापति पद से इस्तीफा दिया। सितम्बर, 1935 में मेरठ व मुजफ्फरनगर की चीनी मिलों में काम करने वाले मजदूरों की यूनियनों का संगठन किया। सितम्बर, 1935 में दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने प्रधान पद से दिए गए इनके इस्तीफे को वापस लौटा दिया। 1936 में ऑल इंडिया कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के स्वागत समिति के प्रेसीडेंट चुने गए और जनवरी, 1936 में प्रतिनिधियों के सम्मेलन में सम्मिलित हुए। जनवरी, 1936 में लखनऊ में प्रदर्शनी के इंचार्ज बने। ऑल इंडिया कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन में सम्मिलित हुए और भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आए हुए सदस्यों की प्राइवेट गोष्ठियों में भाग लिया और उन्हें प्रेरित किया कि मार्च, 1937 में कांग्रेस मंत्रिमंडल बनाने के सुझाव का विरोध करें। अप्रैल, 1937 के लिए

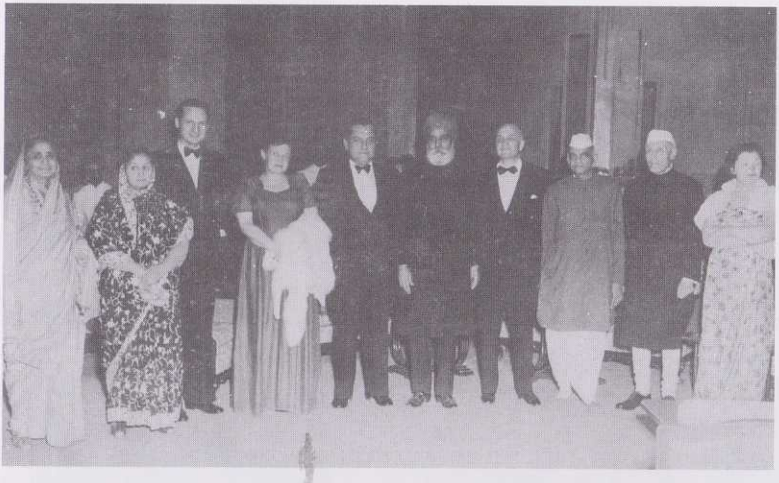

धन-संग्रह किया। अंडमान जेल में चल रही पोलिटिकल कैदियों की भूख-हड़ताल के साथ सहानुभूति प्रकट की और दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कांग्रेस कमेटी के प्रारम्भिक सदस्य बनाने का विशेष अभियान चलाया। दिल्ली में एक कांग्रेस भवन का निर्माण होना चाहिए इसके लिए भी प्रयास किया। 20.10.1937 को किसान कांफ्रेंस मैदानगढ़ी, थाना महरौली में हुई। 09.01.1938 को हकीम अजमल खां दिवस मनाया गया। 26.1.1938 को स्वतंत्रता दिवस मनाने का बहुत सफल प्रयास किया। जनवरी 1938 में स्वतंत्र विचारक व्यक्तियों का संगठन किया और 4.2.1938 को दिल्ली को दिल्ली प्रोविंशियल कांग्रेस कमेटी की वर्किंग कमेटी के सदस्य चुने गये।

27.02.1939 को राजनैतिक बंदियों को जेलों से छुड़ाने के आंदोलन में 'कैदी छुड़ाओ' गठन बनाने का विचार रखा। 20.03.1938 को ऑल इंडिया कम्युनिस्ट लेजिस्लेटर डे मनाया। अप्रैल, 1938 में दिल्ली के हलवाइयों के कर्मचारियों की हड़ताल में भाग लिया।

अप्रैल, 1938 में देहली इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के सम्मेलन की योजनाओं में दिल्ली अजमेरी गेट योजना की कमेटी बनाई।

25.05.1938 को सोलापुर के बंदियों की रिहाई की मांग के लिए एक कमेटी बनाई। सुभाष चंद्र बोस, कांग्रेस प्रेसीडेंट व दिल्ली के स्थानीय

संगठनों के प्रतिनिधियों को मिलने के लिए एक कमेटी बुलाई। 04.10.1938 को सत्याग्रह आंदोलन शुरू करने पर विचार किया।

सुभाष चंद बोस के नेतृत्व में गरम दल की स्थापना

फरवरी, 1938 में लाला शंकरलाल की भेंट आचार्य नरेन्द्रदेव आत्मज बलदेव प्रसाद व दामोदरस्वरूप आत्मज बहादुरमल से मिले और इस बात पर विचार-विमर्श किया कि कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, रायटिस्ट व किसान आंदोलन वालों से सुभाष चंद्र बोस की मुलाकात होनी चाहिए। ये सभी

विचारधारा वाले लगभग एक-दूसरे से मिलते-जुलते विचारों वाले हैं और इनके मिलने से शक्ति बढ़ेगी। लाला शंकरलाल ने बताया कि वे ट्रोपिकल कम्पनी के सहयोगी डायरेक्टर हैं और इन सब विचारधाराओं वालों को संगठित करना सुविधाजनक होगा।

1938 की अंतिम छमाही में लाला शंकरलाल कलकत्ता गए और सुभाष चंद्र बोस से विचार-विमर्श के बाद सहमति प्राप्त की कि कांग्रेस के अंदर गरम विचारधारा वालों का एक संगठन बन जाना अच्छा रहेगा। नरेन्द्रदेव जी भी इस बात पर सहमत हुए कांग्रेस के अंदर भी गरम विचारधारा वालों का संगठन बने।

सितम्बर, 1938 में ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी की मीटिंग दिल्ली में हुई और वहां पर गरम विचारधारा वाले प्रतिनिधियों को विचार-विमर्श के लिए लाला शंकरलाल की कोठी पर बुलाया गया। इस मीटिंग में निश्चय हुआ कि सुभाष चंद्र बोस के नाम से एक वेस्ट ब्लॉक की स्थापना की जाए। बाद में बम्बई में लाला शंकरलाल, मीनू मसानी, पी.सी. जोशी, सुभाष चंद्र बोस ने घोषणा पत्र तैयार किया और लाला शंकरलाल को यह कार्य सौंपा गया कि जो कार्यकर्ता गरम विचारधारा से सहमत हों उनको इसमें सम्मिलित किया जाए। विशेषकर कम्युनिस्ट, रायटिस्ट कीर्ति किसान व अन्य व्यक्ति जो

किसी दल व संगठन से सम्बन्धित नहीं हैं, उनकी सहमति डाक द्वारा ली जाए।

जब सुभाष चंद्र बोस दूसरी बार कांग्रेस के अध्यक्ष के लिए खड़े हुए तो लाला शंकरलाल सुभाष चंद्र बोस के चुनाव आंदोलन के संचालक थे। सुभाष चंद्र बोस के लिए समर्थन प्राप्त करने के वास्ते वे पंजाब, सीमा प्रांत, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश व बम्बई आदि क्षेत्रों में कार्य कर रहे थे और सुभाष चंद्र बोस ने बंगाल, असम, उड़ीसा आदि क्षेत्रों में चुनाव कार्य को भिन्न-भिन्न संगठनों को बांटा हुआ था। चुनाव से कुछ समय पूर्व सुभाष चंद्र बोस लाला शंकरलाल व सरदूल सिंह कविश्वर लाहौर में मिले, शंकरलाल के साथ कर्म सिंह धूर्त भी मेरठ से आए हुए थे जो कीर्तिदल का

सहयोग दिलाने का आश्वासन दे रहे थे।

मेरठ में कीर्तिदल के ऑफिस में शंकरलाल, हरवेन्द्र सोढ़ी व दुल्ला सिंह से मिले। गरम विचारधारा वाले व्यक्तियों की एक मीटिंग कलकत्ता में 1939 के प्रारम्भ में हुई। त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन के लिए एक प्रस्ताव का प्रारूप बनाया गया और यह भावना प्रकट की गई कि भारत में स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए एक निर्देशन कमेटी बनाई जाए। सुभाष चंद्र बोस ने 8000 रुपये लाला शंकरलाल को प्रचार कार्य के लिए दिए। नत्थूलाल पारिख बम्बई वाले भी बम्बई के प्रतिनिधियों को व्यय के लिए रुपयों का प्रबंध कर रहे थे। उन्होंने हर प्रतिनिधि को एक-एक हजार रुपये दिये थे। इन रुपयों में से लाला शंकरलाल ने कुछ रुपया सीमा प्रांत के गुलाम मोहम्मद, मुंशी अहमद्दीन, डॉक्टर भगवान सिंह पंजाब वालों, योगेश चटर्जी उत्तर प्रदेश वालों, नसिंहदास अजमेर वालों, पी.सी. जोशी बम्बई वालों व अन्य प्रतिनिधियों को जो त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में जा रहे थे, दिया परंतु त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में इन सब गरम दल वालों को अलग-थलग कर दिया। पं. जवाहर लाल नेहरू व कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों में कई सुभाष चंद्र बोस कांग्रेस प्रेसीडेंट के प्रस्तावित चुनाव से अलग हो गए।

1939 में कलकत्ता में एक मीटिंग हुई, जिसमें सुभाष चंद्र बोस ने प्रथम फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की। जून, 1939 में बम्बई में फॉरवर्ड ब्लॉक के विधिवत प्रेसीडेंट चुने गये। सरदूल सिंह कविश्वर वाइस प्रेसीडेंट व लाला शंकरलाल जनरल सेक्रेटरी चुने गए। शंकरलाल ने देश के भिन्न-भिन्न भागों का भ्रमण किया और देश में धर्म की विचारधारा वालों के प्रति जनमत जगाने का प्रयत्न किया।

मई, 1939 में सुभाष चंद्र बोस ने लाला शंकरलाल के साथ पंजाब व सीमा प्रांत का दौरा किया। सीमा प्रांत में अकबर साह व गुलाम मोहम्मद ने उनके दौरे का प्रबंध किया। सुभाष चंद्र बोस के स्वागत के लिए उन्होंने पठानों को वहां बुलाकर एकत्रित किया। सीमा प्रांत वाले कबाइली भारी संख्या में सुभाष चंद्र बोस के स्वागत के लिए आए और उन्होंने एक स्वर में कहा कि हम देश की आजादी चाहते हैं। उन्होंने यह भी मांग की कि

कबाइली लोगों को सीमा प्रांत के अंदर सम्मिलित किया जाए, जिससे आजादी में उनका पूरा सहयोग मिले।

फारवर्ड ब्लॉक की विचारधारा युद्ध विरोधी थी

सितम्बर, 1939 में द्वितीय महायुद्ध की घोषणा हो गई। सुभाष चंद्र बोस को कांग्रेस वर्किंग कमेटी वर्धा मीटिंग में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। सुभाष चंद्र बोस ने भी ऑल इंडिया फारवर्ड ब्लॉक की कार्यकारिणी मीटिंग वर्धा में उन्हीं दिनों में करने का निश्चय किया और अन्य गरम विचारधारा वालों को भी आमंत्रित किया। इसमें निश्चय हुआ कि कांग्रेस मंत्रिमंडलों को इस्तीफे देकर सरकारी सत्ता से बाहर आ जाना चाहिए और युद्ध के लिए सैनिकों की भर्ती व युद्ध सामग्री के लिए सहयोग व युद्ध के विरोध में प्रचार करना चाहिए। सुभाष चंद्र बोस ने कहा कि ये बड़ा सुंदर अवसर है और इस युद्ध की स्थिति में भारत को स्वतंत्र कराने की योजनाओं को बढ़ाना चाहिए और इस स्थिति का लाभ उठाना चाहिए।

शंकरलाल दिल्ली आकर हरवेन्द्र सिंह सोढी से मिले। हरवेन्द्र सिंह सोढी ने लाला शंकरलाल को बताया कि कीर्ति पार्टी युद्ध विरोधी आंदोलन में पूरी तरह सहयोग देगी और साथ ही कहा कि इस सम्बंध में फारवर्ड ब्लॉक का समर्थन करेगी।

नागपुर में साम्राज्यवादी विरोधी कांफ्रेंस

अक्टूबर, 1939 में सुभाष चंद्र बोस की अध्यक्षता में एक साम्राज्यवादी विरोधी कांफ्रेंस हुई। इसमें तमाम उग्र विचारधारा वाले पक्ष के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। अगले दिन डॉ. भाग सिंह व कर्म सिंह धूर्त देर रात्रि तक सुभाष बोस से विचार-विमर्श करते रहे। भारतीय कम्युनिस्टों ने कहा कि इस युद्ध में रशिया भारत की मदद करेगा और भारत को स्वतंत्रता दिलाने में सहयोग देगा। कम्युनिस्टों ने सुभाष चंद्र बोस से यह भी कहा कि भारत को भी रशिया को सहयोग देना चाहिए। सुभाष चंद्र बोस ने कहा कि इस मामले में विचार किया जाएगा।

जापान में लक्ष्मण प्रसाद शर्मा

रामगढ़ कांग्रेस महासभा के अधिवेशन पर जो कांफ्रेंस रामगढ़ में होने वाली थी उसके लिए शंकरलाल ने पहले रामगढ़ पहुंचकर तमाम प्रबंधों को देखना शुरू किया। यहां पर शंकरलाल की भेंट लक्ष्मण प्रसाद शर्मा से हुई। लक्ष्मण प्रसाद शर्मा नेशनल माइनिंग कम्पनी के डायरेक्टर थे। लाला शंकरलाल का लक्ष्मण प्रसाद से पहले का परिचय था। नेपाल में कोबाल्ट माइनिंग के ठेके की बात चल रही थी। नेपाल गवर्नमेंट इस बात का आग्रह कर रही थी कि जापानी माइनिंग इंजीनियर को वहां का सर्वे करना चाहिए। लक्ष्मण प्रसाद शर्मा ने कहा कि इस सम्बंध में मेरा पत्र व्यवहार मितसुई कम्पनी, टोकियो से चल रहा है, लेकिन अभी तक जापानी माइनिंग इंजीनियर उपलब्ध नहीं हैं।

बम्बई के प्रतिनिधि ने मितसुई के प्रतिनिधि को परामर्श दिया है कि वह शर्माजी को कहे कि वह तुरंत टोकियो जाकर निजी तौर पर इस सम्बंध में बातचीत करें, लक्ष्मण प्रसाद शर्मा अंग्रेजी भी नहीं जानते हैं और इस यात्रा पर होने वाले खर्चे के लिए भी लाला शंकरलाल से सहयोग चाहते हैं। शंकरलाल ने लक्ष्मण प्रसाद शर्मा से कहा कि वह पुनः कुछ दिन बाद कलकत्ता मिलें।

इस बीच रामगढ़ अधिवेशन के अवसर पर सुभाष बोस ने शंकरलाल को कहा कि उनका रशिया जाने के लिए केवल चाइना होकर जाने का ही एक मार्ग है। उन्होंने बंगाल की मिनिस्टरी को 1939 में ही चाइना जाने के लिए पासपोर्ट के लिए आवेदन दिया था परंतु बंगाल गवर्नमेंट ने पासपोर्ट से इनकार कर दिया और इसलिए रशिया जाने के उनकी योजना बीच में ही रह गई।

शंकरलाल ने सुभाष चंद्र बोस को बताया कि वे लक्ष्मण शर्मा के साथ व्यावसायिक बातचीत के लिए जापान जाना चाहते हैं और उन्होंने कहा कि इस योजना की आड़ में वे टोकियो में सोवियत अम्बेसडर से मुलाकात करेंगे। बोस ने उत्तर दिया कि इस पर विचार किया जाएगा।

लक्ष्मण प्रसाद शर्मा ने बनवाया पासपोर्ट

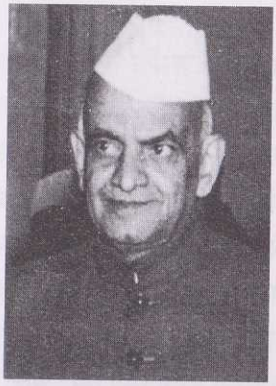

लक्ष्मण प्रसाद शर्मा कलकत्ता में पुन: मिले। सुभाष चंद्र बोस ने शंकरलाल को कहा कि मुझे जापान यात्रा में सफलता की बहुत कम आशा है। उनका विचार है कि टोकियो में जो सोवियत अधिकारी हैं उनसे सम्पर्क करना अधिक लाभप्रद होगा और उनके भारत के सम्बंध में क्या विचार हैं यह हमें मालूम करने का प्रयत्न करना चाहिए।

शंकरलाल ने सहमति प्रकट करते हुए लक्ष्मण प्रसाद शर्मा को कहा कि जापान तक वह उनके साथ चलें और वापसी का किराया न्यू माइनिंग कम्पनी नेपाल के खाते में डालें। लक्ष्मण प्रसाद शर्मा शंकरलाल के पासपोर्ट का प्रबंध करें। लक्ष्मण प्रसाद के पास जापान यात्रा के लिए पासपोर्ट मौजूद था और लक्ष्मण शर्मा ने कहा कि मैं बम्बई से शंकरलाल के लिए पासपोर्ट ले लूंगा। यह बात मार्च, 1940 के अंतिम दिनों की है।

अप्रैल, 1940 को लक्ष्मण प्रसाद शर्मा से दिल्ली में मिले और कहा कि पटेल एण्ड पटेल पासपोर्ट एजेंट बम्बई वालों के माध्यम से शंकरलाल हीरालाल गुप्ता के नाम का पासपोर्ट बनाया है और दूसरा पासपोर्ट इनके अपने खुद के नाम का है। उन्होंने दो एप्लीकेशन फार्म निकालकर शंकरलाल के दस्तखत करा लिए और शंकरलाल ने 1000 रुपये खर्चे के लिए लक्ष्मण प्रसाद शर्मा को दे दिए। यह यात्रा एस.एस. सिराला जहाज से कलकत्ता से 9.4.40 को होनी थी, सुभाष चंद्र बोस के निर्देशों के अनुसार।

शंकरलाल ने लक्ष्मण प्रसाद शर्मा को अपनी यात्रा के उद्देश्यों से परिचित नहीं कराया कि उनका जापान जाने का पोलिटिकल उद्देश्य है। शंकरलाल 6.4.1940 से दिल्ली से कलकत्ता के लिए रवाना हुए और यह प्रबंध उन्होंने दिल्ली में ट्रोपिकल इंश्योरेन्स कम्पनी में काम करने वाले मनोहरलाल के

मार्फत किया था और हिदायत दी थी की मितसुई लिमिटेड के मार्फत उनके लिए 2000 रु. भिजवा दें। उन्होंने मनोहरलाल को बता दिया था कि वे जापान जा रहे हैं और दिल्ली में किसी अन्य को इस बात की जानकारी नहीं थी। कलकत्ता पहुंचकर सुभाष चंद्र बोस के मकान पर बहुत रात्रि को गए। सुभाष चंद्र बोस ने शंकरलाल को सावधान किया कि वह टोकियो में रशिया के साथ संपर्क करते हुए बहुत सावधानी से काम लें।

सुभाष चंद्र बोस ने शंकरलाल को यह भी चेतावनी दी कि जापान रशिया का बहुत विरोधी है। उन्होंने यह भी कहा कि ब्रिटिश भारतीय स्वतंत्रता की मांग को आसानी से मानने वाले नहीं हैं। बोस ने ये भी बताया कि वह टोकियो में सोवियत असेम्बली में किसी अन्य को अपने विश्वास में न लें और वह स्वयं ही जाएं। अगर जापान में उन्हें किसी की सहायता लेनी हो तो वह रासबिहारी बोस पर विश्वास कर सकते हैं। एक और व्यक्ति ए.एन. सहाय हैं जिनसे हम जापान में मदद ले सकते हैं। यदि किसी वजह से रासबिहारी बोस जापान में न मिलें तो उन्हें राजा महेन्द्र प्रताप से सम्पर्क नहीं करना है। सुभाष चंद्र बोस ने अपने हाथ लिखा एक पत्र शंकरलाल को दिया जो सोवियत अम्बेसडर के नाम का था और उसमें शंकरलाल का परिचय दिया था कि वह फारवर्ड ब्लॉक के सेक्रेटरी हैं और सुभाष चंद्र बोस के विश्वासपात्रों में हैं। सुभाष चंद्र बोस ने शंकरलाल को बताया कि सोवियत अम्बेसडर को फारवर्ड ब्लॉक अखबार में छपा वह अंक भी दिखाएं जो सुभास बोस के अपने हस्ताक्षरों में है और जिसमें फिनलैंड पर रशिया द्वारा किए गए आक्रमण का समर्थन है। शंकरलाल को कम्युनिस्ट विचारधारा रखने पर ज्यादा जोर दिया और इसी विचारधारा से भारतीय रेवोल्यूशनरी कार्य कर रहे हैं और यह बताया कि वह यह भी ध्यान रखें कि जवाहरलाल नेहरू ने रशिया की विदेश नीति और फिनलैंड पर आक्रमण की निंदा की। सुभाष चंद्र बोस और उनके अनुयायी ही इतनी दूरदर्शिता और साहस रखते हैं कि वे रशिया की कार्यवाही का समर्थन करते हैं। हालांकि फारवर्ड ब्लॉक भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से पृथक संस्था है। वह रशिया की विचारधारा और उद्देश्यों को मानते हैं। उन्होंने शंकरलाल को बताया कि उन्हें रेवोल्यूशनरियों

के आंदोलन पर सोवियत रूस का सहयोग मांगना चाहिए कि वह किस सीमा तक भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सहायक हों। शंकरलाल को सोवियत अम्बेसडर को विश्वास के साथ बताना चाहिए कि भारत सोवियत रिपब्लिक ऑफ इंडिया के लिए तैयार है और वे रशिया के साथ निजी व्यापार संधि करने के लिए तत्पर हैं। केवल उसे शीघ्र ही स्वतंत्र होने की इच्छा है। ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध भारत की विरोधी भावना है और वे रशियन अम्बेसी की सहानुभूति चाहते हैं और यदि रशिया वालों का भारत के पक्ष में भावना मिली तो सुभाष चंद्र बोस स्वयं भारत से वहां जाएंगे और स्वतंत्रता के लिए बातचीत करेंगे। सुभाष चंद्र बोस ने फारवर्ड ब्लॉक की कापियां शंकरलाल को दी, जिसमें रशियन समर्थन के लेख छपे थे और उनकी सफल यात्रा की कामना की। शंकरलाल व लक्ष्मण प्रसाद शर्मा 9 अप्रैल, 1940 को कलकत्ता से जहाज से रवाना हुए और पिनांग, सिंगापुर, हांगकांग होते हुए शंघाई पहुंचे। रास्ते में कोई बाधा नहीं आयी। शंघाई पहुंचकर लाला शंकरलाल ने अपना जहाज बदल दिया और तेज गति से चलने वाली जापानी किश्ती ले ली ताकि वे पहले पहुंचकर राजनैतिक बातें कर लें और वहां पर मितसुई कम्पनी में भी आगे सम्पर्क कर लें।

9 मई, 1940 को शंकरलाल कोबे पहुंचे और यहां से रेल द्वारा टोक्यो रवाना हुए। टोक्यो में वह प्रथम श्रेणी के होटल में ठहरे और दूसरे दिन वह सीधे रशियन अम्बेसी में गए और तीन दिन बाद का टाइम वैस्टने कौंसिल से मिलने का मिला। कौंसिल ने मिलने पर शंकरलाल को इंगलिश में बताया कि वह अम्बेसडर से नहीं मिल सकते और मैत्रीपूर्वक शंकरलाल से पूछा कि उनके मिलने का क्या उद्देश्य है? शंकरलाल ने कहा कि सोवियत यूनियन मिशन के अंतर्गत तमाम छोटे-छोटे राष्ट्र साम्राज्य के शासन से स्वतंत्र होना चाहते हैं और अम्बेसडर साहब से मिलकर यह जानना चाहते हैं कि भारत को स्वतंत्र कराने में रशियन अधिकारियों की क्या मदद करनी चाहिए और सोवियत अधिकारी इस संबंध में गांधी जाति की नीति नहीं समझ पाए हैं। रशिया का किसी पर आक्रमण करने की कोई योजना नहीं है, न भारत पर और न किसी उसके क्षेत्र पर आक्रमण करने का कोई निशाना है। उन्होंने

परामर्श दिया कि देश को अपनी स्वतंत्रता के लिए अपने आंदोलन को जारी रखना चाहिए और कम्युनिस्ट देशों को सामने रखकर काम करना चाहिए। अम्बेसडर की ओर से पूछा गया कि क्या शंकरलाल कम्युनिस्ट हैं। लाला शंकरलाल ने कहा कि वे स्वयं अभी तक किसी कम्युनिस्ट संगठन के सदस्य नहीं हैं, परंतु उनकी पूरी हमदर्दी कम्युनिस्ट उद्देश्यों के साथ है। लाला शंकरलाल ने फारवर्ड ब्लॉक की वे कापियां निकाल कर दीं, जिसमें कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा फिनलैंड पर किए गए आक्रमण का समर्थन किया गया था।

भारत के कम्युनिस्ट किसानों और मजदूरों में क्रांतिकारी भावना फैलाने में सफल रहे हैं। अंत में लाला शंकरलाल को बताया गया कि रशिया समय आने पर भारत की मदद करेगा, परंतु अभी उसका वातावरण नहीं बना है।

रशियन अधिकारियों के मांगने पर जब लाला शंकरलाल ने अपना पासपोर्ट दिखाया तो उस पर शंकरलाल हीरालाल गुप्ता का नाम लिखा हुआ था और सुभाषचंद्र बोस ने शंकरलाल के माध्यम से जो पत्र भेजा था, उसमें सिर्फ शंकरलाल लिखा था। यह देखकर सोवियत अधिकारियों ने कहा कि पहले शंकरलाल को अपने परिचय सम्बंधी प्रमाण देने चाहिए।

भारतीय सहयोग देने वालों की एक मीटिंग का विज्ञापन जापानी अखबारों में ए.एम. सहाय की ओर से छपा था। विज्ञापन को देखकर शंकरलाल जी उस मीटिंग में सम्मिलित हुए और ए.एम. सहाय के माध्यम से रासबिहारी बोस से मिलने का कार्यक्रम बनाया। जब ए.एम. सहाय और रासबिहारी बोस मीटिंग वाले हाल में आए तो शंकरलाल ने उनसे मुलाकात के समय कहा कि मैं एकांत में रासबिहारी बोस से बात करना चाहता हूं।

शंकरलाल को बताया गया कि अच्छा ही रहेगा कि वह अकेले रासबिहारी बोस से मिलने के लिए आ जाएं। इस वार्तालाप के बाद ए.एम. सहाय ने अपने आप में कुछ घुटन-सी महसूस की और कुछ क्रोध की रेखाएं माथे पर दिखाई देने लगी परंतु उन्होंने मुंह से एक शब्द भी नहीं बोला।

अगली बार रासबिहारी की भेंट शंकरलाल से हुई तो एकांत में बात करते हुए रासबिहारी बोस ने पूछा कि सुभाष चंद्र बोस रशिया से मिलने और

बातचीत करने के लिए इतने उत्सुक क्यों हैं? मिस्टर स्टालिन के विरुद्ध इतनी भावना क्यों रखते हैं। रासबिहारी बोस ने रूस के निस्बत जापान से सहायता लेने का सुझाव दिया। शंकरलाल ने कहा कि पहले मुझे ऐसा प्रमाणपत्र दिला दीजिए जो रशिया में मेरा परिचय देने के लिए संतोषजनक हो। उसके बाद जापान के साथ बैठकर विचार-विमर्श करूंगा।

रासबिहारी बोस ने शंकरलाल को सूचित किया कि उन्होंने शंकरलाल के परिचय के लिए प्रबंध कर लिया है और उन्हें परामर्श दिया कि वह रशिया की मदद भारत के लिए न मांगे, इससे कोई फायदा भारत को होने वाला नहीं है। जब लाला शंकरलाल रशियन कौंसिल से मिले तो उन्होंने शंकरलाल को बताया कि रशिया का इरादा किसी देश पर आक्रमण करने का नहीं है और यदि भारतीय कम्युनिस्ट किसानों और मजदूरों में क्रांति फैलाने और उन्हें संगठित करने में सफल होते हैं तो उस अवस्था में रशिया उनकी सहायता करेगा, परंतु प्रारम्भ में रशिया का ऐसा कोई विचार नहीं है।

शंकरलाल ने कहा कि यदि रशिया वाले भारत की स्वतंत्रता में सहयोग देते हैं और फासिस्ट शक्तियों के विरुद्ध खड़े रहते हैं तो सुभाष चंद्र बोस और उनके अनुयायियों का पूरा सहयोग सोशलिस्ट रिपब्लिक इन इंडिया की स्थापना में मिलेगा। फिर शंकरलाल रासबिहारी बोस के पास गए। उन्होंने शंकरलाल को बताया कि भारतीय जापानी शक्तियों से अनभिज्ञ हैं। थाइलैंड, वर्मा दोनों ही क्षेत्र जापानियों के कड़े समर्थक हैं और भारतीय सीमाओं पर जापान के प्रति सबके हृदयों में सहयोग की भावनाएं नजर आती हैं।

जापान और भारत सामाजिक, व्यवहारिक व धार्मिक तौर पर एक संस्कृति में बंधे हुए हैं और भारतीयों को जापानियों के विरुद्ध यदि कोई भावनाएं हो तो उसे भुला देना चाहिए।

लाला शंकरलाल अगले दिन जर्मनी की टोक्यो अम्बेसी में गए। शंकरलाल ने मुलाकात के समय जर्मन अम्बेसी को बताया कि वह भारत की स्वतंत्रता के सम्बंध में सहयोग चाहते हैं। शंकरलाल ने कहा—मेरी पार्टी फारवर्ड ब्लॉक के नाम से है वह बातचीत के लिए इच्छुक है कि हिटलर की नयी योजनाओं में भारत की स्थिति क्या रहेगी। जर्मन दूतावास ने पूछा कि

क्या भारतवासी विदेशी शक्तियों के शासन से मुक्त होना चाहते हैं? अगले दिन जर्मन कौंसिल के लोग होटल में आए और शंकरलाल से क्षमा याचना करते हुए कहा कि उन्हें दुख है कि उनके हृदय को व उनकी भावनाओं को इस बात से काफी ठेस पहुंची है कि भारत में कोई जर्मनी कालोनी बन जाए। हिटलर तो केवल ब्रिटेन को कुचल देना चाहता है और वारसा संधि का बदला चुकाना चाहता है। भारत व दूसरे उपनिवेश जर्मन विजय के साथ-साथ मुक्त समझे जाएंगे। व्यापारिक संधि स्वतंत्र भारत के साथ स्वतंत्र रूप में होगी और सम्बंध बढ़ेंगे।

इसके साथ-साथ जर्मन राजदूत ने कहा कि ब्रिटिश अधिकारियों ने मुस्लिम देशों की हमदर्दी को गंवा दिया है। ब्रिटिशों ने टर्की के अंग-विच्छेद कर दिए हैं और तेल पर एकाधिपत्य जमा दिया है और अफगानिस्तान से भी मतभेद पैदा कर दिए हैं, जिसके कारण अमानउल्ला सम्राट को अफगानिस्तान से इटली में जाकर आश्रय लेना पड़ा। इजिप्ट ब्रिटिश विरोधी हैं और इसी प्रकार शेष देशों के मुसलमान भी हैं। जैरूसलम के मुफ्ती का जिक्र करते हुए कहा कि ब्रिटिश इंडिया में मुसलमानी रियासतों के नागरिक ब्रिटिश विरोधी हैं। इस सम्बंध में उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि हैदराबाद, भोपाल आदि के चार मुस्लिम शासित रियासतें ब्रिटिश विरोधी हैं। भारत में खाकसार आंदोलन के संचालक भारत जर्मन आक्रमण का स्वागत करेंगे। उनके संगठनों को जर्मनी से आर्थिक सहायता मिल रही है और लड़ाई के बाद समझौते के समय बिन्दुओं को एक तरफ छोड़ दिया जाएगा और जाहिर होगा कि मुसलमानों ने जर्मनी के साथ सहयोग बढ़ाकर सहायता की है। इस सम्बंध में जर्मन सैनिकों के सम्बंध में एक फिल्म भी दिखाई गई। अंत में विदा होते समय कहा कि हम फिर मिलेंगे।

इसका मतलब यह होगा कि ब्रिटिश प्रशासकों को हटाकर वहां जर्मनी के शासक आ जाएं। जर्मन कौंसिल ने कहा कि हिन्दुओं की संस्कृति मुझे बहुत पसंद हैं। उन्होंने एक धार्मिक चिह्न स्वास्तिक रखा हुआ है। मैक्समूलर को चाहिए कि वह वेदों का जर्मन अनुवाद करें।

दिल्ली में राजनीतिक जीवन के जन्मदाता लाला शंकरलाल

''वह हीरा है, हीरा। आप उसे नहीं जानते। वह सच्चा देशभक्त और हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थक है।'' महात्मा गांधी ने एक बार दिल्ली में राजनीतिक जीवन के जन्मदाता लाला शंकरलाल के सम्बंध में ये उद्‌गार प्रकट किये थे। आज वे इस संसार में नहीं रहे, लेकिन दिल्ली का कोना-कोना उनके साहसी जीवन की साक्षी दे रहा है। दिल्ली का कौन-सा भाग ऐसा है, जो उनकी सेवा से अछूता रह गया हो।

लाला शंकरलाल एक बागी खानदान के बागी उत्तराधिकारी थे। उनका जन्म 6 मार्च, 1885 को अम्बाला में हुआ था। उनके दादा का नाम लाला हरदेव सहाय था। नवाब झज्जर ने सन् 1857 के गदर में जो गद्‌दारी की थी, उसमें लाल हरदेव सहाय को भी बलि का बकरा बनाया गया। उन्हें सन् 1887 में फांसी दे दी गई। लाला शंकरलाल के पिता का नाम लाला हीरालाल था। वे काफी समय तक रियासत पटियाला में तहसीलदार रहे। लालाजी की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा पटियाला में हुई। उन्होंने डीएवी कॉलेज लाहौर से बीए पास किया। पिताजी की इच्छा थी कि मेरा बेटा सरकारी नौकरी करे, लेकिन बेटा नहीं माना। आखिरकार कपड़े की एक दुकान खोलकर अपना कारोबार करने लगा।

सन् 1908 का युग था। पटियाला में तूफान आया हुआ था। आर्यसमाज को एक बागी और क्रांतिकारी संस्था घोषित कर दिया गया था। अनेक आर्यसमाजी नेताओं पर राजद्रोह के मुकदमे चले। लाला शंकरलाल भी इन्हीं

लोगों में से एक थे। बड़े-बड़े आर्यसमाजी क्षमा मांग कर छूट गए, मगर लालाजी ने क्षमा नहीं मांगी। अदालत ने उन्हें काले पानी की सजा दे दी। हुक्म हुआ कि पटियाला रियासत से निकल जाओ। तुम हथियार जमा कर रहे हो और सरकार का तख्ता पलटना चाहते हो, लेकिन लालाजी जमकर बैठ गए। पटियाला से बाहर नहीं गए। सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर 5 साल के लिए जेल में ठूंस दिया।

दिल्ली में शुभारम्भ

लाला शंकरलाल 1913 में जेल से रिहा हुए और सीधे दिल्ली चले आए। दिल्ली में उन्होंने कपड़े का एक स्टोर खोला जो 1918 में लिमिटेड हो गया।

सन् 1916 में होम रूल लीग की एक बैठक लखनऊ में शुरू हुई लाला शंकरलाल भी उसमें शामिल हुए। वहां बड़े-बड़े नेताओं के भाषणों से वे अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने इन नेताओं को दिल्ली आने का निमंत्रण दिया। मगर सबने असमर्थता प्रकट कर दी। लालाजी को जोश आ गया और बोले, "आप नहीं आते तो न आइए। मैं अकेला ही काफी हूं। मैं अपने भाषणों से ऐसी आग लगा दूंगा कि दिल्ली आप लोगों के आन्दोलन की अग्रणी हो जाएगी।"

लखनऊ से वापस आने के बाद लालाजी ने खूनी दरवाजे के कोने में होम रूल लीग का दफ्तर खोल दिया। लीग का बाकायदा चुनाव हुआ। मिस माईनल प्रधान चुनी गई तो लाला शंकरलाल उपप्रधान।

कांग्रेस का जन्म

1918 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन दिल्ली में किया गया। उन दिनों दिल्ली में कांग्रेस का नाम लेना गुनाह था, लेकिन लाला शंकरलाल ने गली-गली में घूमकर कांग्रेस के हजारों सदस्य बनाए और चंदा भी किया। स्वर्गीय पं. मदनमोहन मालवीय कांग्रेस अधिवेशन में सभापति थे। प्रदत्त था, स्वागताध्यक्ष कौन बने? पदलोलुप होते तो लाला शंकरलाल ही स्वागताध्यक्ष बन सकते थे, लेकिन भारी विरोध के बावजूद उन्होंने स्वर्गीय हाकिम अजमल खां को स्वागताध्यक्ष चुनवा दिया। अधिवेशन हुआ बड़ी शान से हुआ। दिल्ली की गली-गली कांग्रेस के नाम से गूंजने लगी।

रोलेट-एक्ट का विरोध

सन् 1921 में जब रोलेट-एक्ट पास होने वाला था तो महात्मा गांधी ने उसके खिलाफ आवाज उठायी। लाला शंकरलाल ने इस आहवान का समर्थन किया। दिल्ली में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद, हकीम अजमल खां और डॉ. अंसारी के परामर्श से एक कार्यक्रम तैयार किया गया। उसके अनुसार स्थान-स्थान पर सभाएं की गई और उनमें वक्ताओं ने रोलेट-एक्ट की धज्जियां उड़ायीं। यह फैसला किया गया कि 6 अप्रैल को दिल्ली में मुकम्मल हड़ताल हो। लालाजी के जोशीले भाषणों से दिल्लीवासियों में इतना जोश पैदा हुआ कि 30 मार्च से ही हड़ताल शुरू हो गई। स्टेशन पर कुछ दुकाने खुली थीं। लोगों ने उन्हें बन्द कराने की कोशिश की। मामला तूल पकड़ गया। पुलिस ने हड़ताल कराने वालों पर गोली चला दी। चांदनी चौक में 'बाली कम्पनी' वालों ने अपना कारोबार बंद नहीं किया। झगड़े की नौबत आ पहुंची। लाला शंकरलाल को पता चला। वे खाना खा रहे थे, लगी लगायी थाली को बीच में छोड़कर वे मौके पर पहुंचे। उनके समझाने-बुझाने से 'बाली कम्पनी' वालों ने अपनी दुकान बन्द कर दी। 30 मार्च से 20 अप्रैल तक दिल्ली में मकम्मल हड़ताल रही।

सरकार परेशान हो गई। उसने पानी व बिजली मुहैया करना बन्द कर दिया, लेकिन हड़ताली घबराए नहीं, स्वयंसेवक दल तैयार कर घर-घर पानी, पहुंचाने लगे। हड़ताल के दिनों जलते हुए जलूस निकाले गए, लेकिन कोई खास दुर्घटना नहीं हुई। इसका सारा श्रेय लालाजी को था।

डकैती व विद्रोह का आरोप

18 दिन के बाद हड़ताल खत्म हुई। सरकार ने लाला शंकरलाल को गिरफ्तार कर लिया। उन पर डकैती व बगावत का मुकदमा चलाया गया। बंगाल के लब्धप्रतिष्ठ वकील देशबंधु चित्तरंजनदास उनकी पैरवी करने दिल्ली आए। परिणाम यह हुआ कि लालाजी जीत गए, लेकिन फिर भी उन्हें 4 महीने की जेल की सजा दे दी गई।

तावान देने का विरोध

सन् 1927 में सरकार ने घोषणा की कि 1919 में जो हानि हुई, उस पर

दिल्ली से तावान वसूल किया जाए। लाला शंकरलाल की अध्यक्षता में एक सभा हुई, जिसमें यह फैसला किया गया कि दिल्ली का कोई नागरिक तावान न दे। जनवरी का महीना था। लाला शंकरलाल देहातों में गए और कुछ ऊंट ले आए। उनके गलों में बोर्ड लटका दिए गए, जिन पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा था— '1919 का तावान मत दो। कांग्रेस तथा दिल्ली होमरूल लीग का हुक्म यही है।'

सन् 1920 में यह निश्चय किया गया कि पटौदी-हाउस खरीदा जाए, उसमें शहीदों का स्मारक बनाने की योजना थी, लेकिन प्रश्न था कि पैसा कहां से आए। लाला शंकरलाल व उनके साथी काले कपड़े पहनकर निकल पड़े। जहां गए, लोगों ने उनका स्वागत किया और उनकी झोली भर दी।

रामलीला कमेटी और स्वयंसेवक दल

सन् 1921 में लाल शंकरलाल ने दिल्ली रामलीला कमेटी की एक बैठक में भाषण दिया। उसमें उन्होंने यह सुझाव पेश किया कि रामलीला के प्रबंध में पुलिस का कोई हाथ नहीं होना चाहिए। प्रबंध का काम स्वयंसेवक दलों को करना चाहिए। ऐसा ही हुआ और सारा प्रबंध स्वयंसेवकों ने स्वयं किया।

मगर एक दुर्घटना हो गई। रामलीला के जुलूस में एक व्यक्ति की जेब से 1000 रु. निकल गए। पुलिस में रिपोर्ट नहीं दी जानी थी। स्वयंसेवक दल बदनाम होते थे। इसलिए लाला शंकरलाल ने स्वयंसेवकों की सहायता से शहर के बदमाशों को एक स्थान पर जमा किया और उन्हें समझाया की रामलीला के दिन चोरी करना ठीक नहीं। उनके भाषण का असर हुआ। एक बदमाश आगे बढ़ा और बोला— ''लालाजी! यह लीजिए 1000 रु., मैंने ही यह चोरी की थी। मैं कसम खाता हूं कि आइंदा किसी की जेब नहीं काटूंगा।''

ड्यूक ऑफ कनाट का विरोध

जनवरी, 1921 में ड्यूक ऑफ कनाट दिल्ली पधारे। सरकार की ओर से समूचे देश में उनका स्वागत किया गया। महात्मा गांधी और अली-बंधु इसके कट्टर विरोधी थे। उनके परामर्श से लाला शंकरलाल ने इस स्वागत समारोह का बहिष्कार कराया। सारे शहर में हड़ताल हो गई।

कांग्रेस कमेटी स्थापित

इस आंदोलन के साथ दिल्ली में कांग्रेस संगठन को मजबूत किया जाने लगा। कांग्रेस महासमिति के प्रस्ताव के अनुसार दिल्ली में प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का निर्माण किया गया। इस कमेटी के अधीन जिला कांग्रेस कमेटियां स्थापित की गई। इसके प्रधान व प्रधानमंत्री लाला शंकरलाल चुने गए। उन्हीं के प्रयत्नों से वार्ड कांग्रेस कमेटियां कायम हुई। कांग्रेस के चवन्नी सदस्य बनाए गए। कांग्रेस की ओर से सभाएं हुई, जिनमें लोगों से स्कूलों, कॉलेजों और अदालतों का बहिष्कार करने की अपील की जाती थी।

प्रिंस ऑफ वेल्स का विरोध

जुलाई, 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स दिल्ली पधारे। लाला शंकरलाल के नेतृत्व में उनके स्वागत समारोह का बहिष्कार किया गया। घंटा के नीचे पुलिस स्वागत विरोधियों पर गोली चलाना चाहती थी। लाला शंकरलाल आगे बढ़े और बोले, ''जनता पर गोली चलाने से पहले मुझे गोली का शिकार बनाया जाए।'' पुलिस थम गई और उसने लाठी चलाकर लोगों को तितर-बितर किया।

हिन्दू महासभा का अधिवेशन

सितम्बर, 1921 में दिल्ली में हिन्दू महासभा का अधिवेशन हुआ। पं. मोतीलाल नेहरू उसके सभापति और हकीम अजमल खां स्वागताध्यक्ष थे। हिन्दू-मुस्लिम एकता का सुंदर उदाहरण पैदा हुआ।

बिलायती कपड़े का बहिष्कार किया गया। बिलायती कपड़ा न मंगाने की प्रतिज्ञा की। सरकार घबरा गई। दिसम्बर महीने में उसने कानून संख्या 18 की दफा 17 के अनुसार एक स्वयंसेवक दल को गैरकानूनी घोषित कर दिया। लाला शंकरलाल ने इस चुनौती को स्वीकार किया। उन्होंने अपने 'होमरूल वालंटियर कोर' का नाम बदलकर 'स्वराज्य सेना वालंटियर कोर' रख दिया। सैकड़ों व्यक्ति इसके सदस्य बने। 9 दिसम्बर को लाला शंकरलाल और लाला हरिबंस सहाय गिरफ्तार कर लिए गए। 26 दिसम्बर को उन्हें क्रमशः तीन साल व चार साल की जेल की सजा दे दी गई। वालंटियर के कई सदस्यों को भी जेल दी गई।

जेल में स्वयंसेवकों पर तरह-तरह के अत्याचार किए गए। लालाजी ने जेल अधिकारियों की इस कार्रवाई का तीव्र विरोध किया। एक बार खुराक खराब दी गई। कैदियों ने लाला शंकरलाल से परामर्श किया। फलस्वरूप उन्होंने बैरक में बन्द होने से इनकार कर दिया। उन्हें बन्दूकों से डराया धमकाया गया लेकिन फिर भी वे नहीं माने। जेल अधिकारियों ने लालाजी से क्षमा मांगी। सब कैदी बैरकों में बंद हो गए। उन्हें अच्छी खुराक मिलने लगी। बाद में लालाजी को मिंटगुमरी जेल भेज दिया गया। वहां जब उन्हें खास श्रेणी में रखने का प्रस्ताव रखा गया तो उन्होंने उसे ठुकरा दिया। उन्होंने 'सी' क्लास में रहना मंजूर किया। 1924 में वे जेल से छूटे। दिल्ली आने पर उनका शानदार स्वागत किया गया।

साम्प्रदायिक झगड़े

1924 में जब लाला शंकरलाल जेल से बाहर आए तो समूचे देश में साम्प्रदायिक झगड़ों का दौर चल रहा था। हिन्दू संगठन, शुद्धि, तब लीग और संजीम का जोर था। आरती, नमाज और पानी के छींटों पर झगड़े हो जाते थे। बाग दिवार के एक कुंए पर दोनों ओर से ईंटों की वर्षा होने लगी। लालाजी समझौता कराने के लिए गए तो उनके भी एक ईंट लग गई। कटड़ा नील की मस्जिद में कुछ मुसलमान नमाज पढ़ रहे थे। हिन्दुओं ने उनको मारना चाहा। लालाजी को पता चला। वे दौड़कर मस्जिद के दरवाजे पर खड़े हुए और हिन्दुओं से बोले, "पहले मेरी गर्दन पर छुरी फेरो, फिर इनको भले ही काट लेना।" हिन्दू लोग सहम गए। लालाजी मुसलमानों को मस्जिद से सकुशल बल्लीमारान ले आए।

हीरा है हीरा!

दिल्ली में कई और बाजारों में भी हिन्दू मुस्लिम दंगे हो गए। लाचार होकर महात्मा गांधी को बुलाया गया। कूचा चेलान (दरियागंज) में अली-बंधुओं के मकान पर हिन्दू व मुस्लिम नेताओं की एक बैठक बुलाई गई। लाला हजारीलाल जौहरी ने गांधीजी से निवेदन किया, "कृपया, लाला शंकरलाल को तो कतई न बुलाइए और सबसे बातें कीजिए, मगर शंकरलाल से नहीं। वह तो पूरा मुसलमान हो गया है।"

गांधीजी ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा, ''लाला शंकरलाल हीरा है हीरा। आप उसको नहीं जानते। वह सच्चा देशभक्त और हिन्दू-मुस्लिम एकता का समर्थक है।''

गांधीजी का 21 दिन का अनशन

मुलतान और सहारनपुर में भीषण हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो गए। इससे दुखी होकर महात्मा गांधी ने 21 दिन का अनशन किया। लाला शंकरलाल की आवाज पर दिल्ली के नेताओं ने हिन्दू व मुस्लिम नेताओं का एकता सम्मेलन बुलाया। यह सम्मेलन देशबंधु चित्तरंजनदास की अध्यक्षता में संगम थियेटर में हुआ।

इधर जमनाजी में बाढ़ आ गई। सब नेता और कार्यकर्ता बाढ़-पीढ़ितों की सहायता में जुट गए। लालाजी सहायता कार्य में सबसे आगे थे।

स्वराज्य आश्रम

गांधीजी का अनशन समाप्त हुआ। समूचे देश में शांति थी। इसी साल कांग्रेस ने यह प्रस्ताव पास किया कि सदस्यता के लिए 2 हजार गज सूत काता जाए। स्थान-स्थान पर स्वराज्य आश्रम खोले गए। चर्खे चलाने, खादी तैयार करने का आहवान किया गया। लाला शंकरलाल ने इस आदेश के अनुसार दिल्ली में एक स्वराज्य आश्रम खोला। 1925 में साइमन कमीशन जब दिल्ली आया तो लाला शंकरलाल ने उसके बहिष्कार का आयोजन किया। 18 फरवरी को पूर्ण हड़ताल रही। एक विराट जुलूस निकाला गया। जो 'साइमन वापस जाओ' के नारे लगा रहा था। जुलूस स्टेशन पहुंचा। श्री साइमन ने नारे सुने और सामने भीड़ को देखा। उनकी गाड़ी से उतरने की हिम्मत नहीं हुई।

यतींद्र का अनशन

12 दिसम्बर को श्री यतींद्रनाथ दास ने 64 दिन का अनशन किया। इसके फलस्वरूप उनका देहांत हो गया। उनकी अर्थी लाहौर से कलकत्ता ले जाने की योजना तैयार की गई। अर्थी एक विशेष गाड़ी में रखी गई। जब ट्रेन दिल्ली पहुंची तो उन दिनों लाला शंकरलाल ने दिल्ली में पूर्ण हड़ताल करने

की घोषणा की। उनकी अध्यक्षता में एक सभा हुई, जिसमें यतींद्र की मांगें न मानने पर सरकार की निन्दा की गई।

पूर्ण आजादी का प्रस्ताव

दिसम्बर, 1921 में कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन लाहौर में हुआ। पं. जवाहरलाल नेहरू सभापति थे। लालाजी भी इसमें सम्मिलित हुए थे। सरकार का उत्तर आया, मगर वह संतोषजनक न था। इसलिए रातों-रात को 'पूर्ण स्वतंत्रता' भारत का उद्देश्य घोषित कर दिया गया।

स्वाधीनता दिवस

26 जनवरी, 1930 को स्वाधीनता दिवस मनाने का निश्चय किया गया। लाला शंकरलाल ने दिल्ली में यह दिवस मनाने का बीड़ा उठाया। इस दिन दिल्ली में कौमी झंडे बेचे गए, जुलूस निकाला गया और शाम को एक सभा में स्वाधीनता प्रतिज्ञा को दुहराया गया। इस अवसर पर लाला शंकरलाल ने जो भाषण दिया, वह स्वर्णीय अक्षरों में लिखे जाने लायक है।

सन् 30 का नमक सत्याग्रह

सन् 1930 में लाला शंकर लाल ने दिल्ली में नमक सत्याग्रह का आयोजन किया। नमक कानून तोड़ने के लिए भिन्न-भिन्न जत्थे शहर के कई स्थानों तथा देहातों में भेजे जाते थे। ऐसे लोगों को गिरफ्तार कर लिया जाता था। लालाजी को भी उन्हीं दिनों जमना पुल पर गिरफ्तार किया गया। उन्हें तीन महीने की सजा देकर गुजरात जेल भेज दिया गया। वे 8 जुलाई को छूटे और सितम्बर में फिर गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें दो साल की जेल की सजा दे दी गई।

सन् 32 की दिल्ली कांग्रेस

सन् 1932 में कांग्रेस संस्था गैर-कानूनी घोषित कर दी गई। इन्हीं दिनों कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन दिल्ली में करने का फैसला किया गया। प्रश्न था, इसका प्रबंध कौन करे। लालाजी तैयार हो गए। उन्होंने देश का तूफानी दौरा किया और प्रतिनिधियों को दिल्ली आने का निमंत्रण दिया। प्रतिनिधि वेश बदलकर, झल्लीवाले और घसियारे बनकर दिल्ली पहुंचे। कांग्रेस अधिवेशन हो गया, लेकिन लाला शंकरलाल गिरफ्तार कर लिए गए।

अग्रगामी दल में

सन् 1937 में सुभाष चंद्र बोस कांग्रेस से अलग हो गए। उन्होंने 'अग्रगामी दल' स्थापित किया। लाला शंकरलाल इस दल के मंत्री बने।

1940 में लालाजी चुपचाप दिल्ली से कलकत्ता गए और नेताजी के भारत से भाग जाने की सारी योजना तैयार करके आए। उन्होंने जापान जाकर नेताजी का संदेश वहां की सरकार को दिया। तीन महीने बाद वे भारत वापस आ गए।

फिर जेल यात्रा

इधर उनके शत्रुओं ने यह खबर फैला दी कि लाला शंकरलाल बीमा कम्पनी का पैसा लेकर फरार हो गए हैं। सरकार चौकन्नी हो गई। लालाजी को कलकत्ता में नेताजी के मकान पर गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर सरकार को धोखा देने का मुकदमा चलाया गया। मगर बरी हो गए। परंतु 8 नवम्बर को उन्हें फिर पकड़ लिया गया। उन्हें दिल्ली के लालकिले व लाहौर जेल में यातनाएं दी गई। 1943 में उन्हें लाहौर जेल में बेलपुर, मरकारा और नीलगिरि जेलों में रखा गया। शरत बोस भी उनके साथ थे।

जुलाई, 1945 को लाला शंकरलाल को रिहा कराने के लिए एक विराट सभा की गई। फलस्वरूप 15 सितम्बर, 1945 को वे रिहा कर दिए गए। 18 सितम्बर को वे दिल्ली पधारे और उनका शानदार स्वागत किया गया।

—जगत गोपाल 'स्वदेशी'

A LIFE SKETCH OF LALA SHANKAR LAL

Vinod Aggarwal

Lala Shankar Lal, a torch bearer of the message of freedom and Catalytic of Home Rule League and one of the founder members of Indian National Congress in Delhi was a man of indomitable Courage and ingenuity. He was born in 1885 in Ambala and brought up in Patiala. He completed his higher education in DAV College, Lahore. His grand father, Lala Hardev Singh was hanged in 1857 at Narnaul for participation in the first freedom struggle of India. Lala Shankar Lal was accused of waging war against the Crown and sentenced to death in 1908. It was, however, reduced to transportation for life but Lalaji was released after 5 years, Lalaji nourished the Delhi Congress from 1918-1930 as a General Secretary of Provincial Committee. He was hero of various national activities. The non-cooperation movement in 1921, the civil disobedient movement 1930. He was closely associated with Netaji Subhash Chnadra Bose and Lala Lajpat Rai and was a planner of Netaji's escape to Japan.

He was sentenced to 3 years imprisonment in 1921 in connection with Non-Cooperation Movement. Again in 1927, he was awarded one year's rigorous imprisonment with a fine of Rs 500/- but on an apppeal the term of imprisonment was quashed. Lalaji was also in forefront in Civil Disobediance Movement in 1930 and he challenged the authority of the British Rule. Consequently, he was sentenced to 3 yeard and 2 years rigorous imprisonment on two defferent cousits. Lala Shankar Lal organised the historic All-india Congress Session in Delhi despite ban orders by British Government in 1932. He was detained for two months for defying the orders, Lalaji was again arrested in 1941 to help Netaji Subash Chandra Bose escape. He was, however, released in 1945.

The British applied third degree methods to elict information about the escape but Lalaji was made of steel and Britishers used to call him a tiger thus nothing could they gain.

After the independence, upto his last breath, Lalaji devoted his entire life for the betterment of people. He was on embodiment of secularism, socialism and democracy.

— Vinod Aggarwal
Flat No. 96 & 163, Engineer's Estate,
21, Patparganj, Delhi-110092
Mob. 9868935588

सुश्री लीला अग्रवाल

(3.9.1933–20.5.2010)

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस असार संसार में सभी प्रकार के प्राणी जन्म लेते हैं जो अपने कर्मानुसार अपनी-अपनी आयु भोग कर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। जन्म लेना, संसार भोगना तथा इहलोक से परलोक गमन तो साधारणतया सभी जीव करते हैं, किन्तु कुछ ऐसे विशिष्ट जीव भी इस धरती पर जन्मते हैं जो अपना स्थायी प्रभाव व गहरी छाप हम सभी पर छोड़ जाते हैं तथा जिनको जगत में उनके व्यक्तित्व व कृतित्व के लिए चिरकाल तक स्मरण किया जाता है। ऐसे ही एक व्यक्ति ने इस संसार में जन्म लिया था जो नारी स्वरूप में 'लीला अग्रवाल' के नाम से हमारे बीच विख्यात हुई।

वस्तुतः, आदरणीय लीला अग्रवाल जी किसी परिचय की मोहताज नहीं थीं परन्तु उनकी जीवनशैली, आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च विचार, मानवीय स्वभाव, मधुर व्यवहार एवं विशिष्ट उपलब्धियों से रूबरू कराना परम आवश्यक है। आपने स्वतंत्रता सेनानी लाला शंकरलालजी की धर्मपत्नी श्रीमती मिसरी देवी के भाई लाला बाबूलाल नारनौल वाले एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मिन्नी देवी के यहां जन्म लिया। जन्म के उपरांत ही आपको लाला शंकरलाल सांघी द्वारा गोद ले लिया गया।

परिवार के परिपक्व पुनीत संस्कार, स्वतंत्र विचारधारा, धार्मिक परम्परायें व प्रभावी कार्यशैली आप को विरासत में मिली थी, जिसको आपने अपने जीवन में पूर्णरूप से आत्मसात कर दृढ़ता के साथ बखूबी निभाया तथा निरन्तर निर्वहन किया। आप एक परिश्रमी, जुझारू, लग्नशील एवं सौम्य

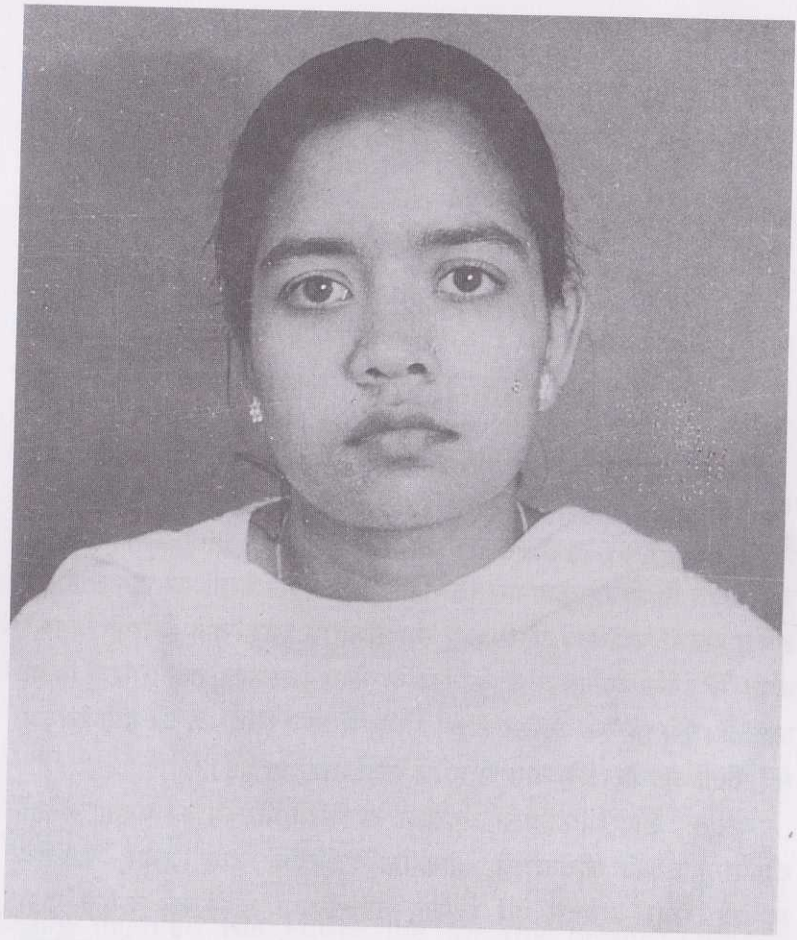

प्रकृति की महिला थी। आपके स्वभाव में धार्मिकता, कोमलता, सरलता, परोपकारिता, सहिष्णुता व दया कूट-कूट कर भरी हुई थी। प्रारम्भ से ही अपके पिताश्री के स्वतंत्रता संघर्ष के साथी मित्रगण (जिनमें बाबू सुभाष चन्द्र बोस आदि भी सम्मिलित थे) दिल्ली प्रवास में प्रायः आपके निवास पर ठहरते थे जहां ये सभी स्वतंत्रता के दीवाने राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए खुले तौर पर आपस में गहन विचार-विमर्श करते थे और भावी योजनाएं तैयार करते थे, जिनका कार्यान्वयन भी निश्चित किया जाता था। स्वाभाविक रूप

से बालिका 'लीला' भी बचपन से ही इन चर्चाओं में स्वत: रुचि लेती थी और आगन्तुक अतिथिओं की सादर-स्नेहिल सेवा सुश्रुषा भी करती थी, जिससे आपको उनका आत्मीय आशीर्वाद भी प्राप्त होता था। अत: लीला जी का स्वभाव स्वाभिमान वा आत्मविश्वास से परिपूर्ण तथा कर्त्तव्यबोध के प्रति समर्पण भाव से ओत-प्रोत हो गया। कुछ कर गुजरने की प्रबल इच्छा आपके मन-मस्तिष्क में पहले से ही हिलोरे लेने लगी थी। तदनुरूप लीला जी ने दृढ़निश्चय किया कि वे शादी नहीं करेंगी और आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर राष्ट्र, समाज, परिवार व दीन दुखियों के कल्याण में ही अपना बहुमूल्य जीवन व्यतीत करेंगी। इसी पावन ध्येय के प्रति अति लग्नशीलता व सम्यक भावना के साथ 'एकला चलो रे' के सिद्धान्त को चरितार्थ करते हुए जीवन की अपनी भावी यात्रा पर अग्रसर हुईं।

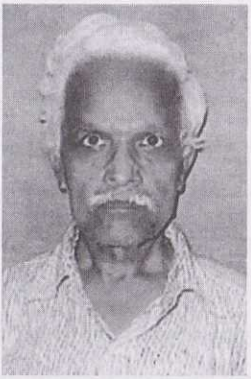

एफ. सी. जैन

आपकी शिक्षा दिल्ली में ही पूरी हुई। प्रारम्भ से ही आप मेधावी व बहुमुखी प्रतिभा की धनी छात्रा रहीं। तत्पश्चात आपने दिल्ली नगर निगम की सेवा को अपना कार्यक्षेत्र चुना। यहां पर आपने विभिन्न पदों को सुशोभित किया तथा असिस्टेंट कलेक्टर के पद से सेवानिवृत हुईं। आपके अन्दर प्रशासनिक क्षमता, कार्यदक्षता व सामयिक निर्णय लेने का कौशल अद्‌भुत रूप से विद्यमान था। अपने कार्यालय साथियों, अधिकारियों व अधीनस्थ कर्मचारियों में आप अत्यन्त लोकप्रिय रही। वास्तव में आपकी चरम सफलता का यही राज था। आप सदैव ही स्कूटर की सवारी बड़े ही निराले अन्दाज में निडरता व स्फूर्ति के साथ करती थीं। वे दिल्ली में पहली महिला थी, जिन्होंने सबसे पहले दिल्ली में स्कूटर चलाया था। उस समय उनके बारे में अखबारों में छपा था। अपने प्यार भरे व्यवहार के परिणामस्वरूप आप 'लीला बहन जी' की संज्ञा से अधिक प्रसिद्ध हुई। अधिकांश व्यक्ति आपको बहन जी के नाम से ही पुकारते थे और बच्चे, जिनमें वे बहुत ही लोकप्रिय

थीं, उनको 'बुआजी' बोलते थे। मेरा परिचय बहन जी से 1980 में हुआ था जब हम सबने मिलकर सामूहिक रूप से 'इन्जीनियर्स को-ऑपरेटिव ग्रुप हाऊसिंग सोसायटी' का गठन किया था।

प्रारम्भ से ही मैं उनके व्यक्तित्व में समाहित मूलभूत गुणों से अभिभूत रहा हूं तथा उनके प्रति गहन श्रद्धा का भाव मेरे अन्तर्मन में रहा है। आप इस सोसायटी की प्रारम्भिक प्राथमिक सदस्य थीं और आपने अपने साथ-साथ अपने अन्य सम्बंधियों व परिचितों को भी प्रेरित कर इस सोसायटी का सदस्य बनाया। यद्यपि बहनजी का अपना जीवन अकेले व्यक्ति की राह पर चलने वाला बीता तदापि आपकी समर्पण व त्याग भावना आपके परिवार के सभी सदस्यों के लिए अनुकरणीय है। आपके भ्रातागण चाहे श्री सांघी जी हों, रमेश मित्तल जी, श्री मोदी जी, बहिन श्रीमती विनोद जी अथवा बहनोई श्री राधारमणजी एवं भांजी डॉ. स्वाति रमन आदि कोई भी हों उनके बच्चों समेत आपने प्रत्येक को निजता व निकटता का एहसास कराया और उनके प्रति आत्मीयता व उनके हितों को प्राथमिकता प्रदान की। इन्होंने भी उनको न केवल परिवार का वरिष्ठ सदस्य माना वरन अपना सिरमौर समझा।

सोसायटी की प्रत्येक गतिविधि, सूक्ष्म से सूक्ष्म क्रिया-कलाप व दिन प्रतिदिन की प्रगति में बहन जी का आरम्भ से ही भागीरथी योगदान था। आपने सोसायटी की कार्यकारिणी समिति में विभिन्न पदों पर (अधिकतर उपाध्यक्ष अथवा कार्यकारिणी सदस्य) अपनी गरिमामयी उपस्थिति, आदि से अन्त तक, दर्ज करा कर सोसायटी को गौरवान्वित किया। आपकी अनुशासन प्रियता एवं गम्भीरता के साथ दिये हुए रचनात्मक सुझावों व अथक सेवाओं से सोसायटी को लाभान्वित करने में गहरी भूमिका रही। सोसायटी के प्रत्येक कार्य को आपने निपुर्णता, उच्च प्राथमिकता, तत्परता व निष्ठा के साथ करके अपनी कर्त्तव्यपरायणता का ऊंचा कीर्तिमान स्थापित किया जिसकी इन्जीनियर्स स्टेट के सभी निवासी हृदय से भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। चूंकि आप कड़क स्वभाव की कर्मठ महिला थीं तो किसी भी गलत बात अथवा तर्कहीन बात को कभी मानने के लिए तैयार नहीं होती थी और सर्वदा अपनी गम्भीर, ईमानदार व स्वच्छ छवि के अनुरूप अपने प्रत्येक

न्यायोचित प्रस्ताव व सुझाव को जनहित में अत्यन्त प्रभावकारी ढंग से निर्भीकता के साथ प्रस्तुत करती थी। आप नारियल की भांति ऊपर से कठोर व अंदर से कोमल प्रकृति की धनी वीरांगना थी। आपका हृदय साहस, कार्यकुशलता, संस्था के प्रति अटूट आस्था एवं उद्देश्य के प्रति प्रतिबद्धता जीवन जीने की कला को रेखांकित करता है।

बहन जी करुणा की प्रतिमूर्ति व मानवीय मूल्यों की सजग प्रहरी थीं। सभी जीवों के प्रति प्रेम व दया आपके स्वभाव में था। विशेषत: बच्चों से असीम स्नेह, उनके समुचित विकास व कल्याण के लिए विभिन्न योजनाएं, कार्यशालाएं व प्रतियोगिताएं आदि का समय-समय पर आयोजन करती थीं। उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए कला के माध्यम से उन्हें मंच पर अवसर उपलब्ध कराती थी। बालिकाओं के लिए सैल्फ डिफैंस कैम्प के अतिरिक्त सोसायटी प्रांगण में धार्मिक सत्संग, सामाजिक उत्सव-मिलन, होली, दीपावली, तीज, स्वतंत्रता व गणतंत्र दिवस आदि त्यौहारों पर सामूहिक रूप से भव्य कार्यक्रमों को आयोजन करना और सभी निवासियों को प्रोत्साहित करना आपको विशेष रुचिकर था। आपको कभी भी बच्चों के विरुद्ध कोई भी मामूली-सी घटना अथवा जरा-सी अनुचित बात, जो बच्चों के अहित में हो, कतई सहन नहीं होती थी, ऐसी स्थिति का पूरी मजबूती व अतिरेक के साथ विरोध करती थी। सभी बच्चे आपको अतुल्य प्यार व परम आदर के भाव से देखते थे, आपको अपना सच्चा अभिभावक मानते थे। इसी प्रकार महिलाओं में भी उच्चतम् सम्मान व गहन स्नेह के साथ आपका विशिष्ट स्थान था। वे भी आपको अपना शुभ चिन्तक समझती थीं।

अपनी सोसायटी के अतिरिक्त भी कर्मयोगी लीला अग्रवाल ने इस क्षेत्र की अन्य सोसायटियों के साथ समन्वय कर आपसी तालमेल से यहां के निवासियों के लिए मूलभूत आवश्यकताओं व समस्याओं के निवारण हेतु तथा अपेक्षित सुविधाओं की प्राप्ति के लिए वांछित सहयोग प्रदान कर इस सहकारी आवासीय क्षेत्र का चहुंमुखी विकास करने का सफल प्रयास किया।

संघर्षशील लीला जी अपने अंतिम समय में भी मृत्यु से संघर्ष करती रहीं

तथा अपनी लम्बी बीमारी से लगातार बहादुरी के साथ जूझती रहीं। परन्तु विधि का विधान है और यह अटल सत्य है कि आयु पूरी होने पर सभी को यहां से एक दिन जाना पड़ता है। अत: लीलाजी भी अपनी इस लीला को समाप्त कर 20 मई, 2010 को शान्त परिणामों के साथ इस लोक से परलोक में गमन कर ब्रह्मलीन हो गई और अपने पीछे छोड़ गई अपूर्ण रिक्तत्ता, चिर स्मृतियां, करुण क्रन्दन एवं प्रेरणामयी भविष्य।

उनके श्री चरणों में हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि।

ॐ शांति: ! शांति: ! शांति: !

— एफ.सी. जैन
संस्थापक सदस्य/अध्यक्ष
ए-93, सूर्य नगर, इंजीनियर्स को-आपरेटिव ग्रुप हाऊसिंग सोसायटी, आई.पी.एक्स., पटपड़गंज, दिल्ली-110092
मो. 9818691623

ISBN : 978-81-929878-5-9

श्री अग्रसेन फाउंडेशन

83, मॉडल बस्ती, करोल बाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 011-23633333, 23510630
E-mail : agroha@gmail.com
Website : www.allagrawal.org